

# दृष्टिकोण

विश्व के मूल्यांकन का रहस्यमय आधार





पूर्ण पुरुषोत्तम  
भगवान स्वामिनारायण



## श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (SMVS)



जीवनप्राण  
अबजीबापाश्री

सत्य, अहिंसा, प्रामाणिकता, पारिवारिक एकता आदि सामान्य आचरण से लेकर आध्यात्मिक दिव्य आचरणों का सिंचन करना और सनातन भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरी उपासना और अनादिमुक्त की आध्यात्मिक अलौकिक स्थिति का आस्वाद लेते हुए एक दिव्य समाज की रचना कर, श्रीजीमहाराज का प्यारा समाज तैयार करना यही इस आध्यात्मिक स्वामिनारायण संस्था का लक्ष्य है।

देश और समाज को प्रत्येक व्यक्ति में आध्यात्मिकता की नई चेतना प्रकट करके जीवन परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण कार्य में यह **SMVS** संस्था सतत सक्रिय रहती है। संस्था के क़रीब १०० संत-पार्षद और क़रीब १०१ त्यागी महिलामुक्तों, १०,००० से अधिक कार्यकर्ता और स्वयंसेवक संस्था द्वारा चल रहे सैकड़ों बाल-बालिका मंडल, युवा-युवती मंडल तथा पुरुष-महिलाओं के संयुक्त मंडल में जीवन परिवर्तन की दिव्य प्रेरणा प्रदान कर अपने जीवन की साफल्यता का अनुभव कर रहे हैं। नए नए आध्यात्मिक अभियानों द्वारा जन जन तक पहुंचकर अज्ञान और दुःखरूपी तिमिर को दूर कर, ज्ञान और सुखरूपी प्रकाश फैला रहे हैं।

भारत, यु.के., अमरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कुवैत, दुबई, केन्या, युगांडा, झाम्बिया आदि देशों में आध्यात्मिक सेवाओं के स्तर को बढ़ाने के साथ-साथ यह संस्था सर्वजनहितावह ऐसे सामाजिक सेवाकार्यों में भी शामिल है। शिक्षा, संस्कार और सत्संग का त्रिवेणी संगम खड़ाकर गुरुकुल जैसे संकुलों का निर्माण करके कई तरुणों के जीवन को आकार देने का सेवाकार्य और ज़रूरतमंदों को शैक्षिक और चिकित्सा सहाय की सेवा से लेकर वस्त्रदान, रोगनिदान केम्प, रक्तदान केम्प जैसी अनेक सेवाएं और चिकित्सा सेवाओं में विशेष रूप से मेडिकल सेन्टर तथा **SMVS** स्वामिनारायण अस्पताल आदि सेवाएं भी इस संस्था द्वारा की जाती हैं। चाहे भूकंप या कोरोना की आपदा हो या बाढ़ की तबाही किन्तु जनहित के लिए राहतकार्यों की सेवा में यह संस्था हर जगह खड़े पैर मौजूद रहती है।

संस्था की ऐसी मूल्यवान आध्यात्मिक, सामाजिक तथा सर्वजनहितावह सेवा-परिचर्या का उजाला सर्वत्र जनमानस में फैल चुका है। देश और समाज के जन जन के प्रति यह संस्था अपने सेवाकार्य और आध्यात्मिक मूल्यों की सुगंध फैलाने में सदैव अग्रेसर रही है और आगे भी रहेगी।

# दृष्टिकोण

विश्व के मूल्यांकन का रहस्यमय आधार

संपादन और अनुवाद कार्य  
साहित्य लेखन विभाग

प्रकाशक  
सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट  
स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर - ३८२४२१

# दृष्टिकोण

विश्व के मूल्यांकन का रहस्यमय आधार

- प्रस्तुतकर्ता** : स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (**SMVS**)
- आद्य स्थापक** : शुद्ध उपासना प्रवर्तक  
प.पू. अ.मु. सद्. श्री देवनंदनदासजी स्वामीश्री (गुरुदेव प.पू. बापजी)
- प्रेरक** : प.पू. अ.मु. सद्. श्री सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री  
(गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री)
- संपादन और**  
**अनुवाद कार्य** : साहित्य लेखन विभाग
- आवृत्ति** : प्रथम, अप्रैल-२०२६
- प्रकाशक** : सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट  
स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर-३८२४२१

# गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री के दिव्य आशीर्वाद

“जैसे विचार तुम करोगे, वैसे तुम जरूर बनोगे।”

हमारी जीवनयात्रा में हमारे विचार, हमारा दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जीवन में आते संघर्षों, चुनौतियों को अगर नकारात्मक दृष्टिकोण से देखा जाए तो दुःखी होना पड़ता है। सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने पर चुनौतियां ही प्रगति की सीढ़ियां बन जाती हैं और संघर्ष सफलता का कारण बन जाते हैं। सुख-दुःख का कारण दृष्टिकोण ही है।

आध्यात्मिक मार्ग में अनादिमुक्त की स्थिति की यात्रा में यदि नकारात्मक विचार करें तो ‘यह तो मुझसे नहीं हो सकता’ ऐसे विचार पीछे हटाते हैं। जबकि सकारात्मक विचार रखकर लगे रहें तो जरूर आगे प्रगति कर सकते हैं। उत्साह, उमंग और आनंद बढ़ते ही जाते हैं।

अध्यात्म हो या व्यवहार, दोनों मार्गों में दृष्टिकोण जितना सकारात्मक होता है, उतने ही प्रश्न खुद उत्तर बन जाते हैं। समग्र समाज को हमारी आज्ञा है कि ‘दृष्टिकोण’ पुस्तिका को बार-बार पढ़ें और मनन करें। साथ ही जो एक्शन पॉइंट के अनुसार आचरण करने का प्रयास करेंगे उनके ऊपर महाराज, बापा और गुरुदेव अंतर से राजी होंगे।

२०२४ २०२५ २०२६ २०२७ २०२८ २०२९ २०३०  
२०३१ २०३२ २०३३ २०३४ २०३५ २०३६ २०३७



# प्रस्तावना

‘जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि’ इस न्याय के अनुसार किसी भी घटना या व्यक्ति के व्यक्तित्व को जिस दृष्टिकोण से देखें, वैसा ही परिणाम मिलता है। महसूस होने वाले सुख-दुःख का आधार भी दृष्टिकोण ही है।

“Change your perspective - it will change your world.”

“दृष्टिकोण बदलो, दुनिया बदल जाएगी।”

व्यक्तिगत जीवन हो, संसार-व्यवहार या व्यवसाय हो या सत्संग हो, नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण अनेक प्रश्न, विवाद पैदा होते हैं। जीवन तनावपूर्ण बन जाता है। मन अलग हो जाते हैं। संबंधों में शुष्कता आ जाती है। जीवन भार रूप बन जाता है।

सकारात्मक दृष्टिकोण एक ऐसी आंतरिक ऊर्जा है जो किसी भी संजोग-परिस्थिति और चुनौती के सामने लड़ने का बल देती है। दृष्टिकोण आपसी संबंधों को और मजबूत बनाने वाला जादू है, आगे बढ़ने का अवसर है। वह जीवन को उत्सवरूप बना देता है। स्वजीवन में, पारिवारिक या व्यवसायिक क्षेत्र में या सत्संग में सर्वत्र सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना सिखाना यह इस पुस्तिका का लक्ष्य है। इस पुस्तिका में मननीय सुवाक्य, गुरुदेव-गुरुजी के जीवन के प्रसंग, हृदयस्पर्शी उदाहरणों के द्वारा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की समझ दी गई है। साथ ही प्रत्येक उदाहरण के द्वारा स्वजीवन में आचरण करने के लिए एक्शन पॉइंट दिए गए हैं। आशा है कि इस पुस्तिका का पठन-मनन स्वजीवन में प्रवेश कर चुकी नकारात्मकता के अंधकार को बाहर फेंक सकारात्मक दृष्टिकोण का दीया प्रज्वलित करेगा।

– साहित्य लेखन विभाग

# अनुक्रमणिका

● दृष्टिकोण : एक अनोखा चश्मा	०६	११. दुःख में सुख	२२
१. अनोखा धन	१०	१२. गणित की उधेड़-बुन	२३
२. रोक-टोक वह टीका नहीं बल्कि मौका	११	१३. निर्जन टापु	२४
३. साइन बोर्ड	१२	१४. मोती के दाने	२५
४. सच्चाई की खिड़की	१४	१५. अन्न ऐसी डकार	२६
५. मनी मैनेजमेंट	१६	१६. नींबू का पेड़	२७
६. चुनौती ही प्रेरणा	१७	१७. सहज में परभाव	२९
७. दिव्यदृष्टि का पाठ	१८	१८. प्रेम का प्रेजेंटेशन	३०
८. मुट्ठीभर नमक	१९	१९. अन्नकूट के व्यंजन	३२
९. निर्मानी सेव	२०	२०. समझ का फ्रेम	३३
१०. जिनियस माता	२१	२१. घड़ी	३४
		● जरा स्व की जांच कर लें	३६

## दृष्टिकोण : एक अनोखा चश्मा

दृष्टिकोण वह किसी भी वस्तु, विचार, परिस्थिति या जीवन को देखने का अपना खुद का अनोखा चश्मा है। अपना खुद का दृष्टिबिंदु है। केवल आंखों से जो दिखाई देता है, उसी से घटना या व्यक्ति का मूल्यांकन करना या धारणा बनाना पर्याप्त नहीं है। उसके बजाय उसे वास्तविकता से देखने, समझने और स्पष्टीकरण का प्रयास करना ही दृष्टिकोण कहलाता है। जैसे एक ही वस्तु को अलग अलग जगहों से, अलग अलग एंगल से देखा जाए तो हर जगह और हर एंगल के अनुसार वह अलग अलग दिखाई देती है। उदा. पेन को साइड से देखें तो लंबी दिखेगी। ऊपर से देखें तो गोल दिखेगी। इस तरह, सिर्फ एक ही जगह और एक ही एंगल से देखकर किसी भी व्यक्ति या वस्तु का पूरा निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। उसे हर तरह के दृष्टिकोण से देखें तभी उसकी वास्तविकता समझ में आ सकती है। ज्यादातर हम एक या दो पहलू देखकर ही व्यक्ति या वस्तु के बारे में मान्यता या पूर्वाग्रह बना लेते हैं और उसे दोषी ठहरा देते हैं। लेकिन असल में दोष हमारे दृष्टिकोण में है; यह समझने की जरूरत है।

जीवन के रंगमंच पर जो कुछ हुआ है, हो रहा है या होने वाला है वह कैसा है ? उससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि व्यक्ति उसे किस दृष्टिकोण से देखता है और स्वीकार करता है ? इस मूल्यांकन पर ही सुख-दुःख का आधार है। नकारात्मकता की परख जोड़-घटाव से नहीं, बल्कि संगति से होती है।

आज दुनिया में ज्यादातर व्यक्तियों के जीवन में किसी भी बात में पहला विचार नकारात्मक ही उभर आता है। विचारों का उद्भव ही नकारात्मक मूल बिंदु से होता है। जो व्यक्ति के आत्मविश्वास को खत्म कर देता है, पारिवारिक संबंधों को खट्टा कर देता है।

‘You can’t live a positive life with a negative mind.’ अर्थात् ‘नकारात्मक विचारों के साथ कभी उत्कृष्ट जीवन नहीं जीया जा सकता।’

‘With a positive mindset you can turn every challenge into chance, every loss into a gain and every failure into a success.’ अर्थात् ‘सकारात्मक विचारधारा से आप हर चुनौती को अवसर में, हर नुकसान को लाभ में और हर असफलता को सफलता में बदल सकते हैं।’ क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण केवल नजर नहीं है; यह मन की गहराई से निकलने वाली दीर्घदृष्टि है। अलग नजरिए से जीवन को देखने का अंदाज है।

छोटी-सी समस्या को वास्तविक से ज्यादा बड़ी मान लेकर नकारात्मक दृष्टिकोण वाले दुःखी हो जाते हैं। जबकि बहुत बड़ी बड़ी समस्याओं में भी सकारात्मक दृष्टिकोण वाले सुखी और आनंदित रहते हैं। सुख-दुःख का कारण समस्या नहीं, बल्कि दृष्टिकोण ही बन जाता है। इसलिए सकारात्मक दृष्टिकोण वाले समस्या की सीढ़ी चढ़कर सफलता और सुख के शिखरों को पार कर लेते हैं। उन पर किसी के नकारात्मक शब्दों, प्रतिक्रियाओं या वातावरण का भी असर नहीं पड़ता। उल्टा, उनकी सकारात्मकता की आभा चारों ओर फैली नकारात्मकता को सोख लेकर सकारात्मकता को फैलाती

है। वे दूसरों की खामियों में भी खूबी देखते हैं। और अपनी खामियों को देखकर, स्वीकार करके उनमें सुधार करने का प्रयास करते हैं। वे किसी भी व्यक्ति से मिलने वाले मार्गदर्शन या रोक-टोक को सकारात्मक रूप से ग्रहण करके जीवन को उन्नत बनाते हैं।

घर-परिवार या सत्संग में जिसका सकारात्मक दृष्टिकोण हो, वह सबके साथ आसानी से घुल-मिल सकता है। हर किसी की बात को समझ सकता है। समस्या में भी समझदारी से रास्ता निकालकर परिवार की आत्मीयता को अखंडित रखता है। वे कौन क्या करता है? कैसा करता है? यह देखने के बजाय क्या सीखने मिले इस पर ज्यादा ध्यान देते हैं। उल्टी पड़ी बाजी को भी सुधार देते हैं।

एक बात निश्चित कर लें कि, यदि देखनी ही हो तो किसी की खूबी देखें, खामी नहीं। खामी संबंधों में दरार डाल देती है। यदि बहुत देखने की इच्छा हो तो अपनी खामियों को देखकर सकारात्मक रहकर सुधार करना चाहिए, तो सब खुश होते हैं। संबंध और भी गहरे बनते हैं।

### हमारे हाथ की बात

B यानी Birth (जन्म) और D यानी Death (मृत्यु)। इन दोनों में से एक भी हमारे हाथ में नहीं है। लेकिन ABCD में B और D के बीच C आता है। C यानी Choice (पसंद)।

जन्म से मृत्यु के बीच का समय किस दृष्टिकोण से गुजारना है, यह चोइस हमारे हाथ में है। सकारात्मक या नकारात्मक विचार करना - यह हमारी चोइस है।

## गुरुजी प.पू. स्वामीश्री रचित कीर्तन ( संकलित )

जैसा सोचोगे तुम, वैसा बन जाओगे;  
मेरे से नहीं होगा, तो कभी नहीं होगा,  
होगा ही होगा क्यों नहीं होगा, तो मानो होगा ही होगा;  
बस, वो ही जीवन का सार है... ०१

चिंतामणि तुल्य महाराज, सदा हमारे पास हैं;  
करो मनोरथ पूर्ण करेंगे, आशीर्वाद खासंखास है,  
सत्पुरुष सदा साथ, जिनके हम दास हैं;  
अपार बल है उनका, फिर क्यों नासीपास हैं... ०२

हिम्मत बिन बात कभी सोचो नहीं, कभी करो नहीं;  
क्या होगा कैसे होगा नहीं होगा, सत्संग में वो कुसंग सही,  
संकल्प है स्वयं श्रीजी का, बापाश्री ने ये बात कही;  
गुरुदेव बापजी ने कोल दिया, इनमें संशय करो नहीं... ०३

अडिग विश्वास से आगे बढ़ो, दृढ़ संकल्प चट्टान जैसा;  
देह नहीं अनादिमुक्त हैं हम, फिर नेगेटिव सोच कैसा,  
स्थिति अनादि देनी है, हमें लेनी है, सदा जागृत रहेंगे ऐसा;  
मूर्ति में हूं, महाराज ही हैं, सब हैं पुरुषोत्तम जैसा... ०४

सूत्रम् : एक दृष्टि अधीर बना देती है, दूसरी धीरज देती है ।  
इसलिए सकारात्मक रहकर समय की राह देखो ।

## अनोखा धन

दिनांक २७-१२-२०१७, गुरुवार को गुरुदेव प.पू. बापजी सूका टींबा, वांदरिया, डोली आदि गांवों में विचरण करके दोपहर को देर से गोधर मंदिर पहुंचे । गुरुदेव भोजन करने के लिए कुर्सी पर विराजमान हो गए । सामने टेबल पर खाली पत्तर था । पू. संत रसोई गरम कर रहे थे । थोड़ी देर लगी इसलिए वरिष्ठ संत उठकर रसोई घर की ओर जाने लगे ।

गुरुदेव प.पू. बापजी ने तुरंत उन्हें रोक लिया और कहा, “स्वामी, ये संत कितने दयालु हैं ! भोजन करने से पहले हमें भजन-भक्ति करने का समय दिया । चलो, उतनी देर धुन-भजन करें ।” “लेकिन दयालु, आपको इस तरह बैठे रहना पड़े ! संतों ने पहले से रसोई गरम करके रखी होती तो...” गुरुदेव ने वहां बैठे संतों से कहा, “संतों, हम तो स्त्री-धन के त्यागी हैं, तो हमारा धन कौन सा है ? तो बड़े संतों ने कहा है : ‘धीरज सम नहीं धन रे, संतों धीरज सम नहीं धन ।’ ” ऐसा कहकर जब तक रसोई गरम हुई तब तक गुरुदेव ने उन संतों को धीरज विषय पर लाभ दिया । सेवक संत क्षोभ अनुभव करते हुए रसोई लेकर परोसने आए । उन्हें देखकर गुरुदेव ने कहा, “स्वामी, आभार ! आपने हमें भगवान का भजन करने का समय दिया ।”

वाह गुरुदेव ! गुरुपद पर विराजमान होने के बावजूद कैसा धीरज !

दर्शनम् : किसी भी संजोग में सकारात्मक रहकर धीरज-रूपी धन को संभालूंगा ।

**सूत्रम् : दृष्टिकोण सकारात्मक हो तो रोक-टोक टक टक नहीं,  
सफलता की नींव लगती है ।**

## **रोक-टोक वह टीका नहीं बल्कि मौका**

भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जब DRDO में काम करते थे, तब एक सीनियर अधिकारी बार-बार किसी न किसी काम में सुधार करने के लिए उन्हें रोक-टोक किया करते थे। कभी-कभी तो कड़क लहजे में रोक-टोक करते; डांटते भी थे। यह देखकर एक कर्मचारी ने उनसे पूछा, “साहब, यह अधिकारी हमेशा टोकते रहते हैं, तो आपको गुस्सा नहीं आता ?”

कलाम साहब ने हंसकर कहा, “नहीं... नहीं... रोक-टोक तो मेरे लिए नया सीखने का मौका है। रोक-टोक को टीका नहीं, सुधार करने का मौका समझता हूँ। इस अधिकारी को मैं अपनी प्रगति का सहायक मानता हूँ। मैं उनके कहने का हेतु समझकर सुधार करता हूँ। फिर भी यदि कोई कमी रह जाए तो सुधार के लिए मार्गदर्शन मांगता हूँ। अगर मैं उनकी बात मन पर लेकर उल्टा ले लूँ तो मेरा सुधरने का मौका चला जाए। नया सीखना बंद हो जाए।”

इस तरह, कलाम साहब ने रोक-टोक की टीका करके गुस्सा करने के बजाय। पोजिटिव दृष्टि से देखा, तो अनोखी ऊंचाई पर पहुंच सके। घर-परिवार में या सत्संग में कोई भी रोक-टोक करे, उसे जितनी सहजता से ग्रहण किया जाए, उतनी सफलता मिलती है।

**दर्शनम् : रोक-टोक की टीका करने के बजाय पोजिटिव लेकर सुधार करूंगा ।**

सूत्रम् : सकारात्मक शब्दों में अनोखी ऊर्जा छिपी होती है;  
जो ऊर्जा आपके द्वारा दूसरों को जागृत करती है।

## साइन बोर्ड

ई.स. २०१२ में रजत जयंती महोत्सव की पूर्व संध्या पर गुरुजी प.पू. स्वामीश्री आयोजन कमिटी के साथ कैंपस विजिट के लिए पधारे थे। दर्शनार्थियों को मार्गदर्शन मिले, इस उद्देश्य से जगह-जगह साइन बोर्ड, सूचना बोर्ड लगाए गए थे। जैसे - 'कचरा यहां-वहां डालें नहीं', 'फूल-पौधें तोड़ना नहीं', 'धक्का-मुक्की करना नहीं', 'महिलाओं को इस तरफ आना नहीं', 'सभा में बातें करना नहीं...'

साइन बोर्ड देखकर गुरुजी ने सुझाव दिया, "सारे साइन बोर्ड सही जगह पर हैं, लेकिन सूचना सकारात्मक भाषा में करें तो ? जैसे - 'कचरा कचरापेटी में डालें', 'फूल-पौधों की सावधानीपूर्वक हिफाजत करें', 'लाइन में ही दर्शन के लिए आएँ' इत्यादि।"

विशेष रूप से गुरुजी ने समझाया, "नकारात्मक शब्द नकारात्मक दृष्टि और व्यवहार के लिए प्रेरित करते हैं। स्वाभाविक रूप से व्यक्ति के मन में नकारात्मकता होती ही है। और उसमें हम बाहर से नकारात्मक शब्द दें तो माइनस-माइनस प्लस हो जाता है, यानी नकारात्मक व्यवहार और बढ़ जाता है। जैसे दो होंठों को अगर तुम 'छूना मत' कहो तो छूएंगे। 'छूना' कहो तो दूर रहेंगे। उसी तरह मनुष्य का स्वाभाविक झुकाव है कि जिस काम से मना करो वह पहले करे। अगर कवर पर लिखा हो कि 'कोई इसे खोले नहीं' तो पहले खोलेंगे। परिवार के सदस्यों में भी ऐसा ही देखने को मिलता है। तो सत्संग

में, परिवार में या व्यवसाय में हमेशा किसी को 'ऐसा मत करो' कहने के बजाय 'ऐसा करो' ऐसी सकारात्मक सूचना देने से सब अपने आप उसका अनुसरण करने लगते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करके दी गई सूचनाएं दूसरों के व्यवहार में परिवर्तन ला देती हैं।”

इस तरह, हमारी सकारात्मक शाब्दिक प्रस्तुति परिवर्तन लाती है – यह पाठ गुरुजी ने आयोजन कमिटी को सिखाया।

**दर्शनम् : किसी भी प्रकार की सूचनाएं सकारात्मक शब्दों में ही दूंगा।**

### विचार मंथन

- मनुष्य वस्त्र बदलता है, मकान बदलता है, गांव बदलता है, नौकरी बदलता है, संबंध बदलता है फिर भी दुःखी रहता है। क्यों, पता है? क्योंकि, वह अपना दृष्टिकोण नहीं बदलता।
- 'हैं' उससे कम दुःखी होने की कला और 'हो' उससे ज्यादा सुखी होने की अनुभूति करने की कला यानी सकारात्मक दृष्टिकोण।
- मन में उतरना और मन से उतरना-इन दोनों में धुंध और धुआं जितना फर्क है। सकारात्मक रवैया रखने वाले लोगों के मन में बस जाते हैं, जबकि नकारात्मक रवैया रखने वाले लोगों के मन से उतर जाते हैं। धुएं की तरह बोरियत पैदा करते हैं।

सूत्रम् : निष्फलता अंत नहीं है, बल्कि एक नया आरंभ है ।

## सच्चाई की खिड़की

दस साल का गुंजन मित्रों के साथ बगीचे में क्रिकेट खेल रहा था । गुंजन ने फोर लगाने के चक्कर में गेंद को जोर से मारा, तो वह सीधे घर की खिड़की से टकराई । कांच चूर चूर हो गया । गुंजन का मन भी चूर चूर हो गया । पापा डांटेंगे, इस डर से वह घबरा गया । इसलिए घर में छिपने की कोशिश करने लगा ।

उसकी मम्मी ने उसे प्यार से कहा, “बेटा, गलती छिपाने से ज्यादा नेगेटिव परिणाम आते हैं । लेकिन निडरता से अपनी गलती को स्वीकार कर लें तो सामने वाले व्यक्ति का उस प्रसंग-गलती के प्रति और हमारे प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है ।”

थोड़ी देर बाद उसके पापा ऑफिस से घर आए । टूटा हुआ कांच देखकर पूछा, “यह क्या हुआ है ?” गुंजन ने हिम्मत जुटाई और पापा के सामने पहुंच गया । कान पकड़कर बोला, “पापा ! सोरी । क्रिकेट खेलते हुए मेरे से यह कांच टूट गया । मेरी गलती हो गई । पापा, वेरी सोरी । आप मुझे मारेंगे तो नहीं न ?” गुंजन का व्यवहार देखकर पिता का गुस्सा शांत हो गया और पूरी घटना के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल गया ।

पिताजी ने गुंजन को बगल में बिठाया और समझाते हुए कहा, “बेटा, कांच टूट गया यह गलत हुआ । तेरी गलती ही कही जाएगी । लेकिन गलती छिपाने के बजाय तू सच बोलकर मेरे पास आ गया, यह मुझे बहुत अच्छा लगा । बेटा, कांच तो मैं बदल दूंगा, लेकिन तू जीवन में सच्चाई का पालन करना कभी बदलना मत ।” गुंजन को साथ रखकर ही पिताजी ने कांच बदला और प्यार से समझाया कि, “क्रिकेट घर के गार्डन में नहीं, सोसायटी के मैदान में



खेला जाता है। की गई गलती को कभी मत छिपाना; तो सब तुझ पर विश्वास करेंगे।” इस तरह, गुंजन इस प्रसंग से निडरता से गलती का स्वीकार करने का पाठ सीखा।

**दर्शनम् : गलती को छिपाने के बजाय निडरता से स्वीकार करके माफी मांगूंगा।**

### सुखी परिवार बनाने के उपाय

#### १. 4S Positive Switch Technique

Step 1 : Stop - तुरंत प्रतिक्रिया (रिएक्शन) न दें।

Step 2 : Smile - स्माइल देकर वातावरण हल्का करें।

Step 3 : Say - नरमी से, मीठे शब्दों में प्यार से बात करें।

Step 4 : Solve - एक-दूसरे को समझकर समस्या का समाधान निकालें।

२. छोटे-छोटे कामों के लिए भी आभार मानें - थैंक यू कहें।
३. किसी को दोष न दें, कारण ढूंढकर समाधान लाने का दृष्टिकोण रखें।
४. परस्पर खुशी के पलों को शेयर करें। हमेशा आनंद में रहें।
५. किसी की गलती पर हल्के मन से माफी देकर, सुधार के लिए प्रोत्साहन दें।
६. अपनी गलती के लिए माफी मांगें।
७. परिवार के सदस्य मिलकर फैमिली टाइम सभा करें और समूह भोजन करें।
८. परिवार के सदस्यों के परस्पर गुणानुवाद करें।
९. एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनें। संकट के समय साथ खड़े रहें।

**सूत्रम् : दृष्टिकोण कैमरे के लेंस जैसा है । जिस दृष्टिकोण से हम दुनिया को देखते हैं, वैसी ही हमें दुनिया दिखाई देती है ।**

## मनी मैनेजमेंट

प्यारे गुरुजी प.पू. स्वामीश्री अहमदावाद के मीठाखली क्षेत्र में पधरामणी के लिए पधार रहे थे । रास्ते में साथ आए एक हरिभक्त ने कहा, “गुरुजी, सच कहूं तो यह बहुत बड़ा आदमी है । बहुत पैसा है फिर भी किराए के घर में रहता है । यह कैसी बात हुई ?”

गुरुजी उस हरिभक्त के घर पधारे । ठाकोरजी की आरती की । गुरुजी हरिभक्त के साथ सत्संग की बातें कर रहे थे । अंत में पूछा, “यह घर आपका है ?” “नहीं... नहीं... गुरुजी, किराए का घर है । लेकिन सब सुविधाएं हैं । किसी बात की कमी नहीं । हर महीने ६०,००० का किराया भरता हूं । यदि मैं यही मकान लोन से खरीदूं तो हर महीने ५,००,००० की किस्त भरनी पड़े । वह किस्त कब खत्म हो ? उससे तो किराए का घर क्या बुरा है ?”

पधरामणी पूरी करके लौटते समय गाड़ी में साथ आए हरिभक्त को गुरुजी ने सिखाया, “नेगेटिव दृष्टि से उन्हें देखें तो हमें लोभी लगेंगे, लेकिन सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें तो ? यह हरिभक्त सही मनी मैनेजमेंट कर रहे हैं । बहुत कुछ होने के बावजूद दिखावा नहीं करते । पैसों को उड़ा नहीं रहें । भविष्य का विचार करके बचत करते हैं । उनसे सीखने की दृष्टि रखनी चाहिए । गुण ग्रहण करना चाहिए ।” गुरुजी की टकोर उनको हृदयस्पर्शी हो गई ।

इस तरह, बाहरी दृष्टि से किया गया किसी का मूल्यांकन भूलभरा होता है ।

**दर्शनम् : किसी को बाहरी दृष्टि से देखकर अवगुण नहीं लूंगा ।**

**सूत्रम् : सकारात्मक दृष्टिकोण एक चुंबक जैसा है ।  
जो अच्छे अवसरों को आपकी ओर आकर्षित करता है ।**

## चुनौती ही प्रेरणा

फ्रांस के पेरिस शहर में सायमन ब्रेल नाम के एक मोची का घोड़े की जीन बनाने का कारखाना था । एक दिन वे किसी काम से बाहर गए थे । उसी समय उनका तीन साल का बेटा लुई खेलते खेलते कारखाने में आया । जीन बनाने के औजारों से खेलने लगा । खेलते खेलते मोची की सुई उसकी आंख में चुभ गई । आंख फूट गई । दूसरी आंख में संक्रमण लगने से लुई दोनों आंखों से अंध हो गया । उसे पेरिस की अंधे बच्चों की स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया । तेजस्वी लुई एक दिन उसी संस्था के प्रोफेसर बने ।

लुई को बचपन से ही नया नया पढ़ने का शौक था । लेकिन अब वह पढ़ नहीं सकता था । इसलिए दूसरों से पढ़वाकर अपना शौक पूरा करता । दूसरे अंधजनों के लिए मन में दुःख रहता । 'मुझे जो करना पड़ेगा करूंगा, लेकिन हर अंधजन पढ़ सके इसके लिए मुझे कुछ करना है ।' इसलिए वह नए प्रयोग करता । उसे पता चला कि युद्ध के समय सेना में गुप्त संदेश भेजने के लिए मोटे कागज पर सुई से छेद करके सांकेतिक चिह्न भेजे जाते हैं । यह सुनकर लुई ने अंधेपन की चुनौती को ही सीढ़ियां बना ली । इस तरह, उन्होंने छह बिंदुओं और ४३ चिह्नों वाली ब्रेल लिपि की खोज की, जिससे आज पूरी दुनिया के प्रज्ञाचक्षु भी पढ़ सकते हैं ।

**दर्शनम् : चुनौतियों में हताश न होकर पोजिटिव विचार से रास्ता निकालूंगा ।**

**सूत्रम् : सब दिव्य हैं ऐसा बोलने और लिखने के बजाय  
समझना और व्यवहार करना करोड़ गुना अधिक है ।**

## दिव्यदृष्टि का पाठ

दिनांक २८-१०-२०१९ को प्यारे गुरुजी पू. वडील संतों के साथ ज्ञानसत्र के विषय में गोष्ठी कर रहे थे । एक सेंटर से पू. संतों का मंडल आया । दूर से पू. संतों को देखते ही “महाराज के स्वरूप पधारे । आओ संतों...” कहते हुए गुरुजी गोष्ठी स्थगित रखकर पू. संतों को नए साल का मिले । एक संत को गोष्ठी में साथ बिठाया । गोष्ठी के बाद नए आए संत को देखकर गुरुजी बोले, “अरे स्वामी, आप कब पधारे ? चलो, नए साल का मिल लें ।” संत तो बहुत खुश थे । लेकिन गुरुजी को तकलीफ न हो, इस हेतु से अन्य संतों ने प्रार्थना की, “दयालु, आप अभी तो उन पर राजीपा जताकर मिले थे ।” गुरुजी ने कहा, “ऐसा ? मिल चुके ?”

सत्पुरुष की हर क्रिया उद्देश्यपूर्ण ही होती है । आज पू. संतों को दिव्यदृष्टि का पाठ सिखाना था । इसलिए गुरुजी बोले, “संतों, सच कहें तो हमने आप में महाराज के अलावा किसी के दर्शन नहीं किए । हम महाराज के अलावा किसी को छूते नहीं और छूने देते नहीं । मिलते नहीं और मिलने देते नहीं । महाराज की साक्षी से कहते हैं । देहदृष्टि करके कभी इन आंखों को अपवित्र नहीं होने दिया । संतो-भक्तों के मनुष्य के रूप में नहीं, मुक्तभाव से ही दर्शन किए हैं । इसलिए ही किसी के भी दोष दिखाई नहीं देते ।” इस तरह, गुरुजी ने अवरभाव में रहते हुए परभाव में कैसे रहना चाहिए – यह दृष्टिकोण दिया ।

**दर्शनम् : परिवार के सदस्यों के मुक्तभाव से दर्शन करूंगा ।**

सूत्रम् : (i) पकड़ो, मत जाने दो । (ii) पकड़ो मत, जाने दो ।  
दो वाक्यों में फर्क केवल अल्पविराम का है, जो सुख-दुःख का कारण बन जाता है ।

### मुट्टीभर नमक

एक युवक पर चारों तरफ से दुःख के पहाड़ टूट पड़े । रात-दिन दुःख से उबरने की कोशिश करता, लेकिन नाकाम । माता-पिता और मित्रों की ओर से भी बार-बार टोका जाता था : “तू कुछ नहीं कर पाएगा । बेकार ही रहेगा ।” ऐसा कहकर उसे नेगेटिव करते ।

युवक इसका इलाज पाने के लिए एक महात्माजी के पास गया । दिल खोलकर सब बात की । महात्माजी ने एक गिलास में मुट्टीभर नमक डाला । युवक से पी जाने को कहा । उसने थू... थू... थू... करके थूक दिया । महात्माजी युवक को सरोवर के किनारे ले गए । एक मुट्टीभर नमक सरोवर के पानी में डाला । महात्माजी ने सरोवर से अंजली भरकर पानी पीने को कहा । युवक ने अंजली भरकर पानी पिया । महात्माजी ने पूछा, “कैसा लगा ?” युवक ने कहा, “मीठा-मधुर”

महात्माजी ने युवक को समझाया कि, “जीवन में जो भी मुसीबत आती है, वह मुट्टीभर नमक जैसी है । उसके सुख-दुःख का आधार तेरा दृष्टिकोण है । जितना समझ का पात्र बड़ा उतना दुख कम होता है । ‘मेरे साथ ही ऐसा क्यों ?’ ऐसा कष्टदायी विचार छोड़कर मुसीबत आई है तो जरूर रास्ता निकलेगा ऐसा सकारात्मक विचार करना चाहिए । वास्तव में दुःख जैसी कोई चीज नहीं है । अज्ञानता के कारण छोटी-छोटी बातें दुःख का कारण बन जाती हैं ।” इस तरह, उत्कृष्ट दृष्टिकोण विकसित करने से समस्या के दुःख को भूलकर आनंद में रहा जा सकता है ।

दर्शनम् : समस्या को ज्यादा मन पर न लेकर समझदारी से काम लूंगा ।

**सूत्रम् : खामी को खूबी बनाकर प्रस्तुत करे,  
वही सकारात्मक दृष्टिकोण है ।**

## **निर्माणी सेव**

स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर में बरसात के समय गुरुजी प.पू. स्वामीश्री पू. संतों के साथ दोपहर में भोजन करने के लिए विराजमान हुए थे ।

उस दिन ठाकोरजी के थाल में फरसाण में सेव रखी थी । पू. संतों ने गुरुजी से उसे ग्रहण करने की प्रार्थना की । इसलिए गुरुजी ठाकोरजी के थाल में रखी गई सेव लेने जा रहे थे । उसी समय पू. संतों ने प्रार्थना की, “दयालु, राजी रहना । थाल में ठाकोरजी को सेव रखते समय तो वह कड़क थी, लेकिन बाहर खुले में पड़ी रहने से उसे हवा लग गई है । आप इस डिब्बे से सेव ग्रहण करें ।”

गुरुजी मर्म में हंसे और बोले, “संतों, सेव को हवा लग गई है ऐसा नहीं बोला जाता । सेव निर्माणी हो गई है । देखो, जैसे मोड़ो वैसे मुड़ जाती है ! सेव जैसे निर्माणी बन जाए तो महाराज को बहुत पसंद आएंगे ।” ऐसा कहकर गुरुजी ने वही सेव ग्रहण की ।

इस तरह, गुरुजी के जीवन में पल-पल, क्षण-क्षण सकारात्मक दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं ।

**दर्शनम् : खामी वाली वस्तु या व्यक्ति में से खूबी देखकर उसके लिए सकारात्मक रहूंगा ।**



सूत्रम् : मुसीबत आए तो समझ जाओ,  
जिंदगी कुछ नया सिखाना चाहती है ।

## जिनियस माता

एक दिन छोटा थोमस अल्वा एडिसन रोते-रोते घर आया । माता के हाथ में चिट्ठी रखते हुए बोला, “मेरे टीचर ने यह चिट्ठी आपको ही पढ़ने को कहा है ।”

माता ने चिट्ठी पढ़ी । उनकी आंखों में आंसू आ गए । उन्होंने मधुर मुस्कान के साथ थोमस से कहा, “मेरे लाड़ले, तेरे टीचर ने लिखा है कि, ‘तुम्हारा पुत्र एक जीनियस है । इस पाठशाला में उसकी क्षमता के अनुसार शिक्षा देने वाले अच्छे शिक्षक नहीं हैं । इसलिए उसे घर पर ही पढ़ाना ।’ ” माता ने कमर कसकर एडिसन को घर पर ही पढ़ाना शुरू किया ।

वर्षों बाद एडिसन दुनिया के महान आविष्कारक और वैज्ञानिक बन गए थे । एक दिन माता की पुरानी चीजें समेटते वक्त उनमें से एक चिट्ठी मिली । उसमें लिखा था, ‘तुम्हारा पुत्र मानसिक रूप से कमजोर है । पढ़ाई में बुद्ध (टोट) है । वह अब हमारी पाठशाला में नहीं आ सकता ।’ चिट्ठी पढ़कर एडिसन गद्गद हो गए । उन्होंने अपनी डायरी में लिखा कि, ‘थोमस अल्वा एडिसन एक समय मानसिक रूप से कमजोर बच्चा था, लेकिन उसकी माता के सकारात्मक दृष्टिकोण ने, विश्वास ने उसे जीनियस बना दिया । सकारात्मक शब्द जीवन की दिशा बदल देते हैं ।’ इस तरह, माता के सकारात्मक शब्दों से बने पॉजिटिव माइन्डसेट से एडिसन दुनिया के महान आविष्कारक बने ।

दर्शनम् : नकारात्मक शब्द बोलकर कभी किसी के जीवन का ब्रेकर नहीं बनूंगा ।

**सूत्रम् : सुख-दुःख का अनुभव परिस्थिति से नहीं, दृष्टिकोण से होता है ।**

## दुःख में सुख

एक बार गुरुजी प.पू. स्वामीश्री सुरत विचरण के लिए पधारे थें । एक गरीब हरिभक्त दर्शन के लिए आए । गुरुजी ने सहजता से पूछा, “क्या करते हो महाराज ?” हरिभक्त ने कहा, “डी.सी. इंजीनियर हूं।” गुरुजी ने पूछा, “भाई, सिविल, मैकेनिकल, कंप्यूटर इंजीनियर तो सुना है, लेकिन यह डी.सी. इंजीनियर क्या होता है ?”

मुख पर आनंद के साथ उन्होंने कहा, “डायमंड कर्टिंग इंजीनियर । दयालु, हीरे घिसता हूं।” “भाई, कोई तकलीफ तो नहीं है न ?” गुरुजी ने पूछा । तब वह भाई खुमारी से बोले, “दयालु, छह महीने पहले जब आप नहीं मिले थे तब बहुत दुखी था । दूसरों का सुख देखकर अपने दुःख से और ज्यादा दुःखी होता था । लेकिन आपने किसी भी परिस्थिति में सकारात्मक सोचने का दृष्टिकोण सिखाया, उस दिन से मैं तो न्याल हो गया हूं । जीवन में जादू हुआ । पहले तो किसी साइकिल वाले को देखकर भी दुःखी होता कि मेरे पास साइकिल भी नहीं है । लेकिन अब सुबह जब मैं पैदल नौकरी पर जाता हूं, तब हीरे के सेठ सब फुटपाथ पर चलने निकले होते हैं । उन्हें देखकर सोचता हूं कि, ‘उन सभी सेठ की तरह मेरे घर में भी गाड़ियां पड़ी हैं, लेकिन स्वास्थ्य अच्छा रहे इसलिए पैदल जाता हूं । सेठ सर्जन डॉक्टर की सलाह से घी लगाए बगैर की रोटी खाते हैं । मैं सर्जनहार की मर्जी से वैसी खाता हूं।’ मुझे कोई दुःख नहीं है । हर बात में ऐसे सकारात्मक सोचने से आनंद के महासागर में डूब गया हूं।”

इस तरह, दुःख को सुख में बदलने के लिए सकारात्मक दृष्टि होनी चाहिए ।

**दर्शनम् : कैसे भी दुःखद संजोग में भी सकारात्मक सोचकर आनंद में जीऊंगा ।**

**सूत्रम् : जीवन के प्रश्न नहीं टलेंगे । दृष्टिकोण बदलो;  
प्रश्न खुद जवाब बन जाएंगे ।**

### गणित की उधेड़-बुन

एक गणित के शिक्षक ने विद्यार्थी से प्रश्न पूछा, “बेटा, अगर मैं तुझे एक सेब दूँ; फिर दो और सेब दूँ तो तेरे पास कुल कितने सेब होंगे ?” विद्यार्थी ने तुरंत जवाब दिया, “चार ।”

“बेटा, सोच-समझकर जवाब दे । पहले प्रश्न ध्यान से सुन ।” ऐसा कहकर शिक्षक ने फिर वही प्रश्न पूछा, तब भी विद्यार्थी ने जवाब दिया, “चार ।”

शिक्षक ने फिर पूछा, “बेटा, तुझे कौन सा फल पसंद है ?”

“नारंगी ।”

“तो मैं तुझे पहले एक नारंगी दूँ; फिर दो और नारंगी दूँ तो कितनी नारंगी होंगी ?”

“तीन ।”

शिक्षक खुश हो गए । विद्यार्थी को शाबाशी दी । फिर वही प्रश्न सेब के बारे में पूछा तो विद्यार्थी ने जवाब दिया, “चार सेब ।” शिक्षक गुस्से में बोले, “मूर्ख, इतना भी नहीं आता ?” ऐसा कहकर एक तमाचा मारने को हाथ उठाया, तभी विद्यार्थी ने बैग से सेब निकालकर शिक्षक को दिखाते हुए कहा, “सर, आज मम्मी ने मुझे नाश्ते के लिए एक सेब दिया है, इसलिए कुल चार सेब ही होंगे न ?” शिक्षक ठिठक गए । तुरंत सोचा, “मैंने विद्यार्थी को गणित सिखाने की कोशिश की । उसके गलत जवाब पर गुस्सा किया । वह ‘चार’ क्यों कह रहा है, यह जाने बिना ही उस पर नाराज हो गया । गलत लगने वाला जवाब सही भी हो सकता है । जरूरत थी मेरे दृष्टिकोण को बदलने की ।” इस तरह, जब कोई विपरीत व्यवहार करता हो तो उसका कारण जानने की दृष्टि जीवन को संतुलित बनाती है ।

**दर्शनम् : मेरे मत से अलग जवाब मिले तो प्रतिकार न करके कारण की जांच करूंगा ।**

सूत्रम् : शिकायत करने वाले को कारण मिलता है,  
प्रयत्न करने वाले को मार्ग मिलता है ।

## निर्जन टापु

एक राज्य में वर्षों से एक परंपरा चली आ रही थी कि कोई भी राजा दस वर्ष राज्य करें, उसके बाद राज्य में नए राजा की पसंदगी की जाती । पुराने राजा को एक निर्जन टापु पर भेज दिया जाता । जहां अन्न-पानी कुछ नहीं मिलता । अंत में अकेला राजा तड़पकर मृत्यु के शरण हो जाता । अगर कोई राजा दस वर्ष सत्ता भोगने के बाद टापु पर जाने से इनकार करे तो जबरदस्ती उसे वहां पहुंचा दिया जाता । कोई शिकायत नहीं सुनता ।

एक बार एक बुद्धिमान व्यक्ति तख्त पर आया । इस राजा ने हुक्म करके दस वर्ष में निर्जन टापु पर विकास किया । खेतीबाड़ी शुरू करवाई । घर बनवाए । कुएं, तालाब खुदवाए । बगीचें बनवाए । बस्ती बसवाई । टापु विकसित गांव जैसा बन गया । दस वर्ष पूरे होने के दस दिन पहले राजा ने अपने परिवारजनों को टापु पर भेज दिया । राजा की दस वर्ष की सत्ता पूरी होने पर उन्हें इस टापु पर भेजा गया । वहां चारों ओर समृद्धि की लहरें उड़ रही थीं । किसी बात की कमी नहीं थी ।

इस तरह, राजा ने दृष्टिकोण बदलकर सकारात्मक प्रयत्न किए तो अपना जीवन तो बचाया ही, भविष्य के राजाओं के जीवन भी बचा लिए ।

**दर्शनम् : विपरीत संजोग से हारने के बजाय मार्ग ढूंढूंगा ।**

**सूत्रम् : आंख के सामने दृश्य तो अनेक हैं,  
लेकिन क्या देखना और क्या नहीं देखना यह हमारे हाथ की बात है ।**

### **मोती के दाने**

दिनांक २६-१२-२०२३, मंगलवार को वासणा पूर्णिमा के समैये में प्यारे गुरुजी प.पू. स्वामीश्री गढ़डा प्रथम के छठे वचनामृत पर लाभ दे रहे थे । उसमें स्वदोष पहचानने के लिए निजदर्शन करके लिखने की आज्ञा की ।

सभा में से एक बालमुक्त ने खड़े होकर अपनी निजदर्शन डायरी गुरुजी को दृष्टि करने के लिए दी । गुरुजी ने दृष्टि की और हसते हुए कहा, “मुक्तराज, इसमें तो कुछ समझ नहीं आ रहा । गांधीजी ने सिर पर हाथ रखा लगता है ।” मुक्तराज ने कहा, “गुरुजी लाओ, मैं पढ़ता हूँ ।” उन्होंने थोड़ा पढ़ा । मुक्तराज के प्रति सारे सभाजनों को सकारात्मक दृष्टिकोण कराने और बच्चा अपने खराब अक्षर के लिए क्षोभ महसूस न करे, इसलिए गुरुजी ने सभा में कहा, “यह मुक्तराज अंग्रेजी माध्यम में पढ़ता है । गुजराती में मुश्किल से पढ़ना-लिखना आता है । इसलिए गुजराती में अक्षर तो ऐसे ही आए न !! अंग्रेजी के अक्षर तो जैसे मोती के दानें । अक्षर उन्हें समझ आए और हमें नहीं समझ आए यह हमारी दृष्टि का दोष है, अक्षर का नहीं ।”

मुक्तराज के अक्षरदोष को खुद पर लेकर गुरुजी ने सभाजनों के मनोभाव को बच्चे के प्रति सकारात्मक कर दिया । इस तरह, गढ़डा प्रथम के छठे वचनामृत का गुरुजी ने अनुभवदर्शन कराया ।

**दर्शनम् : किसी का दोष दिखे तो उसे अनदेखा कर सकारात्मक विचार करूंगा ।**

सूत्रम् : नकारात्मक टीका गटर-गंगा में स्नान करने तुल्य है ।

## अन्न ऐसी डकार

गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री गोधर विचरण पूरा करके स्वामिनारायण धाम लौट रहे थे । एक हरिभक्त ने गाड़ी रुकवाकर गुरुजी के हस्त में समाचार-पत्र की कटिंग का बंडल रख दिया । गुरुजी ने पूछा, “यह क्या है ?” “स्वामी, यह एक धर्मगुरु ने कैसे अघटित कार्य किए हैं; उनकी करतूत समाचार-पत्र में छपी हैं; उसकी जानकारी है ।”

गुरुजी ने तुरंत वह कागज फाड़ दिए और हरिभक्त से कहा, “दयालु, जिनसे हमारा कोई लेना-देना नहीं, उनकी बात हमें जानने की क्या जरूरत ?”

“लेकिन दयालु, यह तो आप संस्था लेकर बैठे हैं तो समाज में क्या हो रहा है, उसकी खबर आपको होनी चाहिए ।” गुरुजी ने कहा, “भाई, ‘जैसा अन्न वैसी डकार ।’ किसी की भी नकारात्मक बातें पढ़ने, सुनने या देखने से हमारी नकारात्मकता बढ़ती है । दूसरों की प्रेरणादायक अच्छी बातें हों तो जाननी चाहिए, लेकिन जो नकारात्मक बात जानने से हमें कोई फायदा ही नहीं होने वाला, वह समय की बरबादी ही कहलाती है । संस्था का सही विकास तो हम जितने महाराज से जुड़ेंगे उतना ही होगा ।” फिर गुरुजी ने गाड़ी में लाभ देते हुए कहा, “किसी की नेगेटिव बात हमारे मन को नकारात्मकता से भर देती है । फिर सब कुछ नेगेटिव ही दिखने लगता है । इसलिए उससे दूर रहना चाहिए । नकारात्मक बातों की चर्चा समय की बरबादी ही है ।”

इस तरह, दोष लेने से दोष की वृद्धि होती है - यह पाठ गुरुजी ने सिखाया ।

**दर्शनम् :** किसी की नकारात्मक बात जानकर समय की बरबादी नहीं करूंगा ।

सूत्रम् : मुसीबत जीवन का हिस्सा है, सकारात्मकता उसका समाधान है ।

## नीबू का पेड़

एक भाई ने घर के आंगन में नीबू का पौधा लगाया था । बारहमासी नीबू का पेड़ बहुत सारे नीबू देता था । अचानक पेड़ की डाल-डाल पर पत्ते सूखने लगे । नीबू की संख्या भी कम हो गई । एक दिन पड़ोसी ने बिना मांगे सलाह दी, “यह नीबू का पेड़ अब किसी काम का नहीं रहा; इसे काट डालो । इसकी जगह कोई दूसरा पेड़ लगा दो ।”

भाई ने सोचा, ‘इस पेड़ ने मुझे वर्षों तक नीबू दिए हैं । गर्मियों में बाजार में नीबू न मिले तब भी हमें कभी नीबू बगैर का नहीं रखा । अब सिर्फ पत्ते सूख रहे हैं, इस छोटी समस्या के लिए क्या इसे काट डालूं ? नहीं... नहीं...’

अगले दिन से उन्होंने पेड़ के पास बैठकर प्यार भरे वचन कहने शुरू किए, ‘देखना तू तो हरा-भरा हो जाएगा । चारों तरफ हर डाल पर हरे-भरे दोगुने नीबू लटकेंगे ।’ भाई ने पेड़ के सूखे पत्ते साफ किए, जड़ों में गोड़ की, खाद डाली, खूब पानी दिया और देखते-देखते चमत्कार हो गया । भाई के सकारात्मक विचारों और प्रोत्साहन का नीबू के पेड़ पर चमत्कारिक असर हुआ । नीबू का पेड़ हरा-भरा हो गया । पहले से दोगुने नीबू आने लगे ।

इस भाई ने पड़ोसी से कहा, “भाई, जीवन में समस्या तो बहुत आएंगी । उन्हें उखाड़कर फेंक नहीं देनी चाहिए । किन्तु उनको संभलकर सावधानीपूर्वक उबरना चाहिए । सकारात्मक रवैया रखकर सही रास्ते निकालने चाहिए । परिवार में कोई समस्या आए तो समय, सहानुभूति, प्यार और मौका देंगे तो अद्भुत परिणाम आएंगे ।”

इस तरह, किसी भी परिस्थिति में सकारात्मक दृष्टि सफल बनाती है ।  
दर्शनम् : सकारात्मक रवैया रखकर समस्या को संभालूंगा ।

### गुरुजी कृपावचनम्

(१) नकारात्मक विचारों का त्याग करना और सकारात्मक विचारों को ग्रहण करना यानी पोजिटिव थिंकिंग ।

#### पोजिटिव थिंकिंग के फायदे

- समय बरबाद होना रुकता है ।
- परस्पर आत्मीयता बनी रहती है, यदि न हो तो बन जाती है ।
- उद्वेग रहित सुख-शांति भरा वातावरण बनता है ।
- अभाव-अवगुण से बचा जाता है ।
- स्वदोष-दर्शन होता है और देहाभिमान का पोषण रुकता है ।
- उत्साह, उमंग और आनंद बढ़ते जाते हैं ।

(२) किसी भी व्यक्ति की प्रगति रोकने वाला स्पीडब्रेकर यानी नकारात्मक विचार । दुःख का कारण ही नकारात्मक विचार है । शरीर में होने वाले रोग का मुख्य कारण मन के कमजोर विचार ही हैं । ९० प्रतिशत रोग मन की निर्बलता से होते हैं । सकारात्मक विचार करने वाले दृढ़ मनोबल से किसी भी असाध्य रोग से मुक्त हो जाते हैं ।

**सूत्रम् : जो जिसका चिंतन करे, वह उस रूप हो जाए ।  
जिसके विचार करेंगे, वह पक्का होगा ।**

### **सहज में परभाव**

दिनांक १९-३-२०२३, रविवार को सुबह प्यारे गुरुजी प.पू. स्वामीश्री नवदीक्षित पू. संतों को साथ लेकर सुरेन्द्रनगर विचरण में पधारे थें । गाड़ी में विराजमान होकर गुरुजी ने सेवक संत से पूछा, “गाड़ी में कौन-कौन से पू. संत हैं ?” सेवक संत ने नवदीक्षित संतों के नाम बताए ।

गुरुजी ने नवदीक्षित पू. संतों से पूछा, “संतों, ये नए भगवा (काषाय) वस्त्र अनुकूल हैं ?” संतों ने कहा, “हां दयालु, अनुकूल हैं ।” गुरुजी मंद मंद हंसे और अवरभाव में भी परभाव देखने की दृष्टि देते हुए बोले, “संतों, ये भगवा वस्त्र तो झूठे हैं । अरे, यह देह भी आत्मा का वस्त्र है; वह भी झूठा है । उसका मनन करके उसे पक्का न करें । हमें तो मूर्तिरूपी सच्चा वस्त्र पहनाया है । चलो, ध्यान करके सच्चे वस्त्र को पक्का करें ।” ऐसा कहकर उन्होंने सबको ध्यान करवाया ।

इस तरह, गुरुजी की अवरभाव की बात को भी परभाव में जोड़ने वाली दिव्यदृष्टि से नवदीक्षित संतों ने भी उत्तम पाठ लिया ।

**दर्शनम् : जीवन की प्रत्येक छोटी-बड़ी बातों में परभाव की बात का बीज बोना सीखूंगा ।**

सूत्रम् : जिंदगी को बांसुरी जैसी बनाओ,  
छेद जितने भी हों लेकिन आवाज मधुर ही निकले ।

## प्रेम का प्रेजेंटेशन

संयुक्त परिवार में रहते दोनों भाई साथ मिलकर व्यवसाय करते थे। एक बार एक बड़े प्रोजेक्ट का काम चल रहा था। बड़े भाई ने सौदा करने के लिए एक सुंदर प्रेजेंटेशन तैयार किया था; जो क्लाइंट को मीटिंग में दिखाना था। डेटा शोर्टिंग करते वक्त छोटे भाई से वह फाइल गलती से डिलीट हो गई।

छोटा भाई घबरा गया। गिड़गिड़ाकर बड़े भाई से माफी मांगी। मन में सोचा कि बड़े भाई की दस दिनों की मेहनत पानी में गई, इसलिए गुस्सा करेंगे। बड़े भाई ने बहुत प्यार से काम लिया। आश्वासन देते हुए कहा, “तू चिंता मत कर। अभी हमारे पास कल तक का समय है। हम दोनों मिलकर नया बना देंगे। तू मदद करेगा न?” “हां भाई, जरूर।”

छोटे भाई ने पूछा, “भाई, मैंने इतनी बड़ी गलती की फिर भी आप...?” छोटे भाई के मुंह पर हाथ रखते हुए बड़े भाई ने कहा, “डिलीट हुई फाइल तो फिर बन जाएगी, लेकिन अगर मैं गुस्सा हो जाता तो हमारे बीच का भ्रातृभाव, प्रेम टूट जाता। विश्वास उठ जाता और संबंध में दरार पड़ जाती। प्रेजेंटेशन, क्लाइंट और सौदे से ज्यादा मेरे लिए मेरे भाई तू कीमती है। मुझे हमारा नाता कभी टूटने नहीं देना। भाई, वस्तु टूटे तो नई आ जाती है, लेकिन संबंध टूटे, लगाव दुःखे, दिल टूटे तो जुड़ने में वक्त लगता है। पैसों से भी वह बहुत बड़ा नुकसान है। अब डेटा शोर्टिंग के वक्त सावधानी रखना। शांति से काम करना।”

इस तरह, प्रेम भरा दृष्टिकोण संबंधों को और गहरा बनाता है।

दर्शनम् : पैसों से अधिक परस्पर के संबंधों को मूल्यवान समझकर उन्हें संजोकर रखूंगा ।

सकारात्मक दृष्टिकोण रखने के लिए क्या करें ? ( Tips )

### A. Think Positive (सकारात्मक सोचें)

- खुद को सकारात्मक स्व-सुझाव देकर मान्यता को बदलें ।
- मन में उठने वाले नकारात्मक विचारों को जागरूकता से टालें ।
- जीवन के सकारात्मक, अच्छे प्रसंगों और अच्छी प्रेरणादायी बातों को याद करें ।
- जिन-जिनका हम पर ऋण है, उनकी कृतज्ञता का विचार करें ।

### B. Do Positive (सकारात्मक ही करें)

- आपस के रोजाना बातचीत में सकारात्मक ही बोलकर स्वर और टोन नरम रखें ।
- किसी की खामी की चर्चा करने के बजाय अच्छे कार्यों की प्रशंसा करें ।
- सबके साथ हंसकर, प्यार से, दिल से बात करें ।
- नकारात्मक बात करने वाले को भी विनम्रता से 'नहीं' कहना सीखें ।

### C. Be Positive (सकारात्मक रहें)

- किसी की रोक-टोक या निंदा को प्रेरणा या स्वविकास का जरिया मानकर सकारात्मक रूप से लें ।
- कोई गलती हो तो हंसते हुए सकारात्मक रूप से स्वीकार करें ।
- समस्या के बजाय समाधान पर ज्यादा ध्यान दें ।
- कुछ भी हो तो तुरंत प्रतिक्रिया न दें; सकारात्मक सोचें ।

सूत्रम् : विविधता में भी एकता छिपी है । जो इसे देख सकता है,  
सुख उसके पीछे पीछे चलता है ।

### अन्नकूट के व्यंजन

दिनांक १२-११-२०२३, रविवार को प्यारे हरिकृष्ण महाराज के साथ गुरुजी प.पू. स्वामीश्री स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर में नए साल के दिन आशीर्वाद सभा में पधारे थें । अन्नकूट आरती के बाद गुरुजी ने पूरे अन्नकूट में रखे व्यंजनों पर दिव्यदृष्टि की थी ।

आशीर्वाद सभा में अन्नकूट में से भी जीवन में सकारात्मक परभावी विचार करने की रीति सिखाते हुए कहा, “अन्नकूट में अलग अलग व्यंजन होते हैं । कोई खट्टे, खारे, मीठे, तीखे, कड़वे भी होते हैं । शायद कोई कच्चा या जल गया भी हो, फिर भी श्रीजीमहाराज राजी होकर स्वीकार करते हैं । उसी तरह परिवार में या सत्संग में सबके बाहरी स्वभाव अलग अलग दिखते हैं । किसी का स्वभाव तीखा, खारा या कड़वा हो फिर भी राजी होकर स्वीकार करना चाहिए; क्योंकि ओरिजिनल तो सब अनादिमुक्त ही हैं ।”

इस तरह, नए साल में अन्नकूट के व्यंजन में से भी दिव्यभाव की दृढ़ता करने की गुरुजी की अनोखी रीति के दर्शन होते ही सब अहोभाव में डूब गए ।

**दर्शनम् :** बाहरी स्वभाव न देखकर वास्तविकता का मनन करूंगा ।

**सूत्रम् : प्रेम भरी दृष्टि से संबंध जीते जा सकते हैं ।**

## **समझ का फ्रेम**

एक संयुक्त परिवार को वंश परंपरागत श्रीजीमहाराज की प्रसादी की एक मिट्टी की मशक मिली थी । एक दिन उतावली से घर की सफाई करते हुए पुत्रवधू से वह मशक टूट गई । परिवार के सदस्यों को उसकी बहुत महिमा थी । जान की तरह उसका जतन करते थे । थोड़ी देर तो घर में सन्नाटा छा गया । पुत्रवधू रोते रोते सास के पास गई । माफी मांगते हुए कहा, “मम्मी, मैंने जान-बूझकर नहीं किया । मुझसे गलती हो गई । मुझे माफ कर दो ।” थोड़ी देर वे चुप रहे । धीरे से पुत्रवधू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, “बेटा, मशक टूट गई तो कोई बात नहीं, लेकिन हमारे बीच की आत्मीयता और स्नेह न टूटे, उसकी चिंता कर । तुझे कहीं चोट तो नहीं लगी न ? तेरी खुशी में मेरी खुशी है ।” सास ने मशक के टूटे टुकड़े इकट्ठे किए और एक फ्रेम में सजाकर मढ़वा दिए । घर की दीवार पर लगा दिए । किसी ने पूछा, “यह क्या है ?” उन्होंने कहा, “यह फ्रेम मुझे रोज याद दिलाती है कि वस्तु भले टूटे, लेकिन इंसान टूटे उससे पहले उसे शब्दों से नहीं, प्यार से संभाल लेना चाहिए । गलती को प्रेम की आंख से देखना चाहिए, गुस्से से नहीं । उस गलती को परिवार के लिए जीवनभर की प्रेरणा समझना चाहिए । यह फ्रेम मुझे रोज समझ देती है ।” उस दिन से घर में कुछ भी हो तो सब इस फ्रेम को देखकर नम्रता से बात करते हैं ।

इस तरह, समझ रूपी दृष्टि से जीवन सरल और सुगम बनता है ।

**दर्शनम् : गलती करने वाले पर प्रेम भरी दृष्टि रखकर दिशा दूंगा ।**

## सूत्रम् : उलझन को खुशी में बदलने का ताकतवर साधन आपका दृष्टिकोण है ।

### घड़ी

एक परिवार में वृद्ध पिता और यश, जय तथा विजय तीन बेटे साथ रहते थे । पिता सोहनलाल को अंग्रेज अमलदार की तरफ से इनाम में प्रशंसा के रूप में एक कलात्मक लोलक घड़ी मिली थी । जो परिवार की शोभा थी और सोहनलाल के लिए गौरव की बात थी । घड़ी दिन-ब-दिन धीमी पड़ती जा रही थी । सही समय नहीं दिखाती थी ।

एक दिन जय ने पिता से कहा, “पापा, अब जमाना बदल गया है, डिजिटल घड़ी लाते हैं ।” यश ने कहा, “नहीं पापा, घड़ी पुरानी जरूर है लेकिन गौरव समान है । इसे रिपेयर करवा देते हैं ।” विजय ने कहा, “पापा, अब तो स्मार्टफोन आ गए हैं, घड़ी की जरूरत नहीं, मोडर्न बने ।”

सोहनलाल ने शांत चित्त से कहा, “देखो, तुम सब मुझे मदद करना चाहते हो । तुम सबका रास्ता सही है; तरीका अलग है ।” जय से कहा, “जा, तू डिजिटल घड़ी ले आ ।” यश को लोलक घड़ी रिपेयर करवाने भेजा । विजय को स्मार्टफोन लेने भेजा ।

तीसरे दिन - पूरे दिन और रात लाइट नहीं थी । चौथे दिन सोहनलाल ने तीनों बेटों को बुलाकर कहा, “कल लाइट नहीं थी तो दिन में लोलक घड़ी ने समय बताया और रात में फोन में समय देखा । बेटों, जीवन में किसी भी बात पर हमारा मत अलग पड़े तो उसे झगड़े का विषय नहीं बनाना चाहिए, सीखने का अवसर मानना चाहिए । परिवार की एकता किसी भी रीति-पद्धति से अधिक है । रीति भले अलग पड़े लेकिन मन अलग नहीं होने देने चाहिए ।”



इस तरह, एक सूत्र में जुड़े रहने के लिए हमेशा सीखने का अभिगम-दृष्टिकोण रखने से अच्छा परिणाम मिलता है।

**दर्शनम् :** दूसरों की अलग रीति और अलग मत को सकारात्मक विचार से ग्रहण करूंगा लेकिन मन अलग नहीं होने दूंगा।

### गुरुजी कृपावचनम्

● नकारात्मकता बुद्धि की उपज है। जबकि सकारात्मकता समझ की फलश्रुति है। बुद्धि का धर्म है तर्क-कुतर्क करना। तर्क-कुतर्क से नकारात्मकता ज्यादा उत्पन्न होती है। इसलिए बुद्धि का प्रयोग टालना चाहिए। समझ से सकारात्मकता ज्यादा उत्पन्न होती है। इसलिए विचारयुक्त जीवन से समझ विकसित करनी चाहिए।

● बेस्ट पोजिटिविटी यानी परभाव का विचार। बेस्ट नेगेटिविटी यानी अवरभाव। अपने जीवन को या दूसरों के अवरभाव के स्वभाव-प्रकृति या क्रिया को देखकर उसमें गहराई में न उतरें। वह दिखने मात्र है, देह के है - ऐसा विचार करके छोड़ दें। महाराज और सत्पुरुष ने दिए परभावी कोल का मनन करें।

● किसी भी कार्य की शुरुआत सकारात्मक दृष्टिकोण से करे; असंभव संभव हो जाएगा। Think positive, be positive, do positive.

## ● जरा स्व की जांच कर लें

१. किसी घटना में आपको बिना दोष के दोषी ठहराया जाए तब मैं तो निर्दोष हूँ। हर बार मेरे साथ ही ऐसा होता है - क्या ऐसा विचार आता है ?
२. निकट की व्यक्ति के साथ दूसरों ने क्या गलत किया है, उसकी चर्चा ज्यादा करते हैं ?
३. आसपास रहने वाले मेरी भावनाओं को नहीं समझते - ऐसा दुःख रहता है ?
४. दूसरों की गलतियां तुरंत पकड़ में आती हैं, लेकिन अपनी नहीं दिखाई देती - क्या ऐसा होता है ?
५. मैं सबके लिए जान फूंक देता हूँ, लेकिन समय आने पर सब भूल जाते हैं। कोई मदद के लिए नहीं आता - ऐसा दुःख होता है ?
६. भूतकाल में हुई या वर्तमान में हो रही घटनाओं को बार बार याद करके दुःखी रहते हैं ? वह दुख लंबे समय तक रहता है ?
७. आपके साथ हमेशा अन्याय होता है - ऐसा लगता है ?
८. आपके आसपास वाले आपकी नकारात्मक बातें फैलाते हैं - ऐसे विचार आते हैं ?
९. किसी की रोक-टोक, भलाई या सुझाव का सहजता से स्वीकार होता है ? या सामने वाले का बुरा इरादा या स्वार्थ है - ऐसा लगता है ?
१०. आपकी आंखों के आंसुओं का कारण दूसरे हैं - ऐसा लगता है ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर स्वजीवन की जांच करके ईमानदारी से दें। ० से १० के बीच मूल्यांकन करें। यदि ५० से कम अंक आए तो इस पुस्तिका को पढ़कर अनुसरण करने की जरूरत है।



आद्य स्थापक  
गुरुदेव प.पू. बापजी



दिव्य प्रेरक  
गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री

## गुरुदेव प.पू. बापजी गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री परिचय

“सिद्धांत में समाधान नहीं और नियम-धर्म में छूट नहीं।” – इस सूत्र को जीवनभर धारण करके भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा-उपासना और महिमा का सर्वजन के हित में प्रचार करने वाले गुरुदेव प.पू. बापजी एक सिद्धांतवादी सत्पुरुष हैं।

गुरुदेव प.पू. बापजी की निर्दोष साधुता, धर्म-नियम की अणीशुद्धता, निर्माणीपन और श्रीजी का कर्तापन आदि गुणों ने लाखों के जीवन में प्रेरणा के पीयूष पिलाए हैं। गुरुदेव प.पू. बापजी ऐसे क्रांतिकारी युगपुरुष हैं कि जिनके अल्प जोग से मुमुक्षु को भगवान स्वामिनारायण के स्वरूप की यथार्थ पहचान हो जाती है और आत्यंतिक कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। अवरभाव की ८६ साल की उम्र तक उन्होंने विशेष रूप से पंचमहाल और समग्र गुजरात के अनगिनत गांव में तथा देश-विदेश के अनेक शहरों में विचरण किया था। हजारों भक्तों के घरों की व्यक्तिगत मुलाकात ली थी। उनके अथाक प्रयत्नों से लाखों संत-हरिभक्तों के जीवन में परिवर्तन के दीये प्रकाशमान हुए हैं।

उनके क्रांतिकारी कार्यों को और अधिक वेग देकर जन जन तक उनका संदेश पहुंचाने के लिए गुरुदेव प.पू. बापजी की आज्ञा से प्यारे गुरुवर्य प.पू. सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री संस्था का नेतृत्व संभाल रहे हैं। साथ ही गुरुदेव प.पू. बापजी के तमाम कल्याणकारी गुणों को धारण कर आदर्श शिष्यत्व को शोभायमान कर रहे हैं। उन्हें स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने प्रतिमा से प्रकट होकर दीक्षा दी और आशीर्वाद दिए कि : “चाहे कैसा भी अधम और पापी जीव हो लेकिन तू उसके मोक्षसंबंधी जो जो संकल्प करेगा वो हम सत्य करेंगे और अंत में मूर्ति के सुख में पहुंचाएंगे। हम सदैव तेरे साथ हैं। तेरे सभी संकल्प पूरे होंगे। इसलिए हम तेरा नाम ‘साधु सत्यसंकल्पदास’ रखते हैं।”

आज देश-समाज में आध्यात्मिक उन्नति का कार्य हो या फिर समाज सेवा का अत्यंत कठिन कार्य हो इसमें गुरुवर्य प.पू. सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री की निरंतर प्रेरणा मिलती रही है। उनकी प्रेरणा से ही **SMVS** संस्था के संत, कार्यकर्ताओ अवरित विचरण करके जीवन परिवर्तन के साथ देहभाव से पृथक् होकर आत्मभूमिका पर जाकर अनादिमुक्त की स्थिति पाकर सदेह स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति का सुख पाने का दिव्य संदेश जन जन तक पहुंचा रहे हैं। ऐसी उच्च आध्यात्मिकता के साथ शैक्षणिक सेवाएं, चिकित्सा सेवाएं, भूकंप पीड़ितों की सहायता तथा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में राहतकार्य की सेवाएं और सरकार द्वारा आते रचनात्मक आयोजनों में भी गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री की प्रेरणा से संस्था सक्रिय रूप से जुड़ती रही है। गुरुदेव प.पू. बापजी और गुरुजी प.पू. स्वामीश्री ने एक बात कही है कि **SMVS** संस्था द्वारा हो रहे सभी सेवाकार्य का श्रेय स्वामिनारायण भगवान के चरणों में ही समर्पित है। उनकी ही दिव्य प्रेरणा से संस्था की आन-बान-शान पूरे विश्व में फैल रही है।

दिनांक २७-१२-२०१७, गुरुवार को गुरुदेव प.पू. बापजी सूका टींबा, वांदरिया, डोली आदि गांवों में विचरण करके दोपहर को देर से गोधर मंदिर पहुंचे। गुरुदेव भोजन करने के लिए कुर्सी पर विराजमान हो गए। सामने टेबल पर खाली पत्तर था। पू. संत रसोई गरम कर रहे थे। थोड़ी देर लगी इसलिए वरिष्ठ संत उठकर रसोई घर की ओर जाने लगे।

गुरुदेव प.पू. बापजी ने तुरंत उन्हें रोक लिया और कहा, “स्वामी, ये संत कितने दयालु हैं! भोजन करने से पहले हमें भजन-भक्ति करने का समय दिया। चलो, उतनी देर धुन-भजन करें।” “लेकिन दयालु, आपको इस तरह बैठे रहना पड़े! संतों ने पहले से रसोई गरम करके रखी होती तो...” गुरुदेव ने वहां बैठे संतों से कहा, “संतों, हम तो स्त्री-धन के त्यागी हैं, तो हमारा धन कौन सा है? तो बड़े संतों ने कहा है: ‘धीरज सम नहीं धन रे, संतों धीरज सम नहीं धन।’”

ऐसा कहकर जब तक रसोई गरम हुई तब तक गुरुदेव ने उन संतों को धीरज विषय पर लाभ दिया। सेवक संत क्षोभ अनुभव करते हुए रसोई लेकर परोसने आए। उन्हें देखकर गुरुदेव ने कहा,

“स्वामी, आभार! आपने हमें भगवान का भजन करने का समय दिया।” वाह गुरुदेव! गुरुपद पर विराजमान होने के बावजूद कैसा धीरज!

